

प्रवाल जिति

प्रश्न 1. प्रवाल जिति से आप क्या समझते हैं। प्रवाल के लिए आवश्यक दशाओं की चर्चा करते हुए इसके विभिन्न प्रकारों का विवरण दें।

2. प्रवाल उत्पत्ति संबंधी महत्वपूर्ण घटनाओं की क्षालीचालक व्याख्या करें।

उत्तर: -

खसुद्र की खतर पर पाये जाने वाले उत्प्लावकीय विशेषताओं में प्रवाल जिति का विशेष महत्व है। यह एक ऐसा विशिष्ट उत्प्लावक है जो स्वयं कविकीय महासागरीय क्षेत्रों में खसुद्र: महादीपों के शरीर किनारे पर पाया जाता है। यह रेखीय क्षयक घाटों के जाल के भाग का हिस्सा है। इन ही जीवितियों में मध्य का जल लेगून का निर्माण करता है। वाहक में प्रवाल जिति एक कैल्कोपिथ चट्टान (न्यूनी प्रधात) है। जिसका निर्माण खसुद्र में पाये जाने वाले पॉलिमर नामक जीव के कविकीय पंजा से हुआ है। ये जीव खसुद्री जल से कैल्शियम तत्व को निकालकर अपने मुलामय शरीर के रक्षा के लिए एक ठोस शैल कविकीय भाग का निर्माण करते हैं। ये जीव खसुद्रों में रहते हैं। एक खसुद्र के मर जाने के बाद इसका खसुद्र उसके ऊपर अपना बयैरा बना लेता है। वाहक में खसुद्रों का विनाश दो कारणों से होता है। अपने ही दबाव के कारण तथा पर्यावरणीय परिवर्तन के कारण। इस प्रकार कालांतर में एक बड़ी स्थूल जिति का निर्माण हो जाता है जिसे प्रवाल जिति कहते हैं।

प्रवाल जिति के अध्ययन के पूर्व प्रवाली जीवों के लिए आवश्यक दशाओं का ज्ञान जरूरी है। इससे इसके विकास का पता चलता है। प्रवाली जीव की उत्पत्ति के लिए निम्न

दशाएँ जरूरी हैं -

- (1) प्रवाली जीवों के विकास के लिए 20°C तापमान आवश्यक माना जाता है।
- (2) प्रवाल उत्पत्ति 45-55 m की गहराई में रहते हैं क्योंकि यहाँ पर सूर्य का प्रकाश उपलब्ध रहता है। इससे अधिक गहराई पर ये जीव जीवित नहीं हो सकते।
- (3) अधिक लवणता में भी प्रवाल जीवित नहीं हो सकते। कम लवणता क्षेत्र भी आवश्यक स्थिति उत्पन्न नहीं कर पाता।

27 मान होगा व 40 मान होगा लवणता इनके लिए निर्दिष्ट माना जाता है।

(4) अत्यधिक गंदला और खच्छ पानी वाली प्रवालों के लिए दैनिकता होगी है, जब: यह नदियों के मुहाने पर नहीं पाया जाता है। (नकल के कारण) दक्षिणी पूर्वी एशिया की नदियाँ इतनी नकल लाली हैं कि प्रवालों का विकास बाधित हो जाता है, जबकि करीबलैंड्स के समीप दार्शनतीय में वर्षों के राजे तक ने प्रवाल को समाल का दिया।

(5) प्रवाल का विकास समुद्र की और होता है क्योंकि यहाँ लहलहा ऑक्सीजन और लवण जैसे द्रव्य समुद्री खाद्य आधानी से उपलब्ध कर पाते हैं। लेकिन प्रवाल के लिए कार्य परिस्थितियाँ नहीं मिलनी क्योंकि यहाँ का जल स्या और गंदला होता है।

(6) समुद्री जल का अणु प्रवाल की मृत्यु हो जाती है। अणु वर्जित विशिष्ट परिस्थितियाँ उपर्युक्त के पूर्वी तट पर पायी जाती हैं। यही कारण है कि इन्हीं क्षेत्रों में अधिकतर प्रवाल जितने पाये जाते हैं।

प्रवाल है - होव है - इचना के आधार पर प्रवाल जितने के तीन

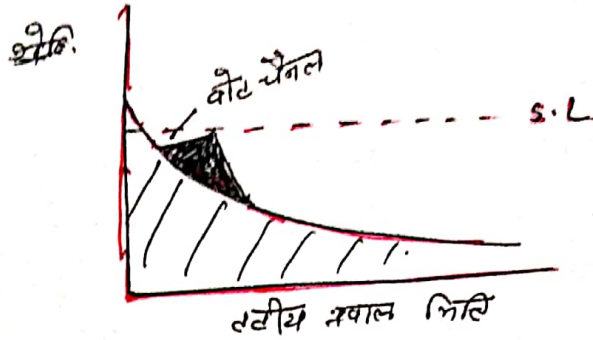
- (1) तटीय प्रवाल जिति (Fringing Coral Reefs)
- (2) शैथिल प्रवाल जिति (Barrier Reefs)
- (3) वलय ~~प्र~~ अथवा लैंगल प्रवाल जिति

तटीय प्रवाल जिति तटीय प्रवाल जिति वह है जो तट के किनारे विकसित होती है। इसकी दो महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ हैं - तट के किनारे और जिति के बीच स्थान के मध्य एक विस्तृत लैंगल होता है जो बीच चैनल कहलाता है। इसकी अधिकतर गहराई 1 केंद्र तक होती है।

(क) तटीय प्रवाल जिति का आंगिक ताल अत्यंत ~~नर~~ मंद होता है बाध्य ताल भी मंद ही होता है। वास्तव में समुद्र की और इतना ताल तीव्र होता है और तट की और मंद होता है।

फंक्शन = 1.87 मासि 2.4 मीटर

इसका घटती गति (ऊपरी भाग) 300-400 और लंबाई 1000 है। ग्रीष्म प्रवाल जिनमें व्यू हैबिटिज, लॉन्गवॉरी डीप वॉटर दक्षिणी प्लोडिड के तब पर, लिमो डीप के तब पर पाई जाती हैं। भारत में मन्ना की खाड़ी में शमश्रु और कंडमान के पास इसकी उपस्थिति है।



Bar Graph

अपघटक प्रवाल जिति

ग्रीष्म प्रवाल की जितियों में शैथिल्य विशालत्व होती है, यह कई मीटर दिकोमीटर चौड़ी और चौड़ाई 1000 से 2000 मीटर तक लम्बी हो सकती है। यह जिति मछलियों या डीपों से 20 मीटर दूर स्थित होती है। यह है यह एक जहाँ च और चौड़ाई लगभग 100 मीटर तक होती है। यह काफी गहरी होती है। इसका आधा 180 मीटर तक अधिक गहराई पाई जाती है। इसका ढाल भी समुद्र की ओर नीच होता है। सामान्यतः पहले सालमार्ग इन्हें आपा काटकर लगभग को युक्त पाया है जो 20 मीटर है। ऑस्ट्रेलिया के इन्-एक में तब के समीप स्थित ग्रीड वीथी डीप वीथी की लंबाई की प्रवाल शैथिल्य है। यह प्रवाल इसकी लंबाई 1900 km तथा चौड़ाई 100 km है। यह है इसकी अधिकतम गूरी 240 km तथा न्यूनतम गूरी 16 km है। इसके अलावा कैरोलाइना डीप के प्रक वॉटर में भी इस जिति के उदाहरण मिलते हैं।

